घोषणा-पत्र

मैं श्यामु सोरेन, शोधार्थी घोषणा करता हूँ कि मेरे द्वारा चयनित विषय 'रणेन्द्र के कथा-साहित्य में आदिवासी- परिवेश, संघर्ष और संस्कृति' पर शोध गंगोत्री वेबसाइट पर अभी तक कोई अनुसंधान कार्य नजर नहीं आए हैं।

वर्षा शालिनी कुल्लू

Dr. Varsha Shalini Kullu
Assistant Professor
P.G Department of Hindi
GOSSNER COLLEGE
Ranchi- 834001

अतः शोध कार्य हेतु मेरे चयनित विषय 'रणेन्द्र के कथा-साहित्य में आदिवासी परिवेश, संघर्ष और संस्कृति' पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुए हैं। मेरे द्वारा प्रस्तावित शोध कार्य मौलिक एवं नवीन होगा।

श्यामु सोरेन
शोधार्थी के हस्ताक्षर
श्यामु सोरेन
विश्वविद्यालय हिंदी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

सेवा में,

डायरेक्टर कम्प्युटर सेंटर
राँची विश्वविद्यालय,
राँची

द्वारा - अध्यक्ष,

हिन्दी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय,
राँची

विषय - शोध-प्रारुप को शोध-गंगोत्री में अपलोड करने के संबंध में

महाशय,

सविनय निवेदन है कि मैं राँची विश्वविद्यालय राँची के हिन्दी विभाग से डॉ. वर्षा शालिनी कुल्लु (सहायक प्राध्यापिका, गोस्सनर कॉलेज) के निर्देशन में "रणेन्द्र के कथा-साहित्य में आदिवासी परिवेश, संघर्ष और संस्कृति" विषय पर शोध कार्य करने की आकांक्षी हूँ; जिसके लिए मैं विभाग में शोध प्रारुप (सिनॉप्सिस) जमा कर चुका हूँ।

वर्षा शालिनी कुल्लु
Dr. Varsha Shalini Kullu
Assistant Professor
P.G Department of Hindi
GOSSNER COLLEGE
Ranchi- 834001

अतः आपसे नम्र निवेदन है कि यथाशीघ्र शोध प्रारुप को शोध गंगोत्री में अपलोड कर प्रमाण-पत्र प्रदान करने की कृपा करें। इस पुनित कार्य के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

आपका विश्वासी
शम्भु सोरेन
UGC NET

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
पीएच.डी. पंजीयन एवं शोध संगोष्ठी

शोधार्थी का नाम : — शामु सोरेन
शोध निर्देशक : — डॉ० पार्वती शालिनी कुल्लू
शोध विषय : → 'रणेन्द्र के कथा-साहित्य में आदिवासी-परिवेश संघर्ष और संस्कृति'

अभिमत / टिप्पणी

विश्वविद्यालय द्वारा निर्गत पत्र की कापियाँ संलग्न करें / सम्बन्धित विषयों पर व्यापक शोध कार्य नहीं हुए हैं / शोध निर्देशक के कोटा में सीट खाली हैं / [signature]

राँची विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के अन्तर्गत इस विषय पर अनेकों शोध कार्य हुए और हो रहे हैं। इसकी सूची संलग्न करें / घोषणा-पत्र संलग्न करें

शामु सोरेन द्वारा घोषणापत्र संलग्न है। [signature] 7.2.2024

शोध- समिति के सदस्य

1. डॉ० हीरा नन्दन प्रसाद : — [signature] 19.3.24 [signature] 19.3.24
2. डॉ० कुमुद कला मेहता — [signature] 19.03.24
3. डॉ० नियति कल्प — नियति कल्प 19.03.24
4. डॉ० किरण कुमारी — किरण कुमारी 09.02.2024
5. डॉ० सुनीता कुमारी — सुनीता कुमारी 10.02.2024
6. डॉ० सुनीता कुमारी गुप्ता — सुनीता कुमारी 9/2/24
7. डॉ० पार्वती शालिनी कुल्लू — [signature] 7.2.2024

संयोजक [signature] 7.2.2024

अध्यक्ष
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
[signature] 20.5.24

Sl No. 000947

24/01/24 Price Rs. 750/-

RANCHI UNIVERSITY, RANCHI

APPLICATION FORM OF REGISTRATION IN RESEARCH PROGRAMMES

Research Programme:

(Please tick one)

Ph.D.	✓
D.Litt	
D.Sc	

Subject: हिन्दी

Faculty: मानविकी

ABOUT THE CANDIDATE

(To be filled by the candidate)

Area of specialization: कथा - साहित्य

Title of the proposed Research work: 'रणेन्द्र के कथा - साहित्य में आदिवासी - परिवेश संघर्ष और संस्कृति'

1. Name शामु सोरेन (SHAMU SOREN)
2. Address for correspondence परसाटाँड़ टुण्डी, धनबाद
3. Academic records:

(Attach the attested copies of all the relevant credentials)

Degrees	Division/Class	Subject (s)	Year of Completion	% of marks secured	College/University
B.A./B.Sc./B.Com	प्रथम	हिन्दी	2019	66%	पी. के रॉय कॉलेज धनबाद
M.A/M.Sc./M.Com	प्रथम	हिन्दी	2021	62%	बी. बी. एम. के. यू. धनबाद

4. Specialization at the Master's level: कथा - साहित्य

5. Previous research work done as evidenced by publications. If any:
(Attach copies of the publications) नहीं

6. Whether any application for research work was submitted previously to this University or any other University, if so, with what result? नहीं

7. Details of teaching experience:

Post-Graduate: ....years

Under-Graduate: Name of the College........शिबू सोरेन डिग्री कॉलेज, टुण्डी, धनबाद

......03............years

Name of the University: .....बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल वि०वि० धनबाद

8. Registration number with year of registration of Ranchi University, if any

9. Are you employed? If yes, give details of Your employment mentioning the nature of Job, designation, etc, (Attach 'no objection certificate' from a person of organization who is authorized to do so)

10. Have you qualified for NET, JRF, GATE, etc.? if so, attached the copy of the result. NET-2021

11. Are you recipient of any financial assistance in the form of scholarship/stipend. etc? if so. give details.

12. About the synopsis

Whether statement of the problem (synopsis) on which he/she proposes to work has been enclosed. The synopsis must contain the section such as: State-of-the-art; Problem to be investigated; Objective of the investigation and motivation: Hypothesis: Research design and methodology; Too to be used in the collection of data; Significance of the study; Its relevance to the present day problem and need of the society, Contribution to the existing knowledge; Future work; Related reference; etc.
(Attached six copies of the synopsis)

13. DECLARATION by the Candidate:-

I hereby declare the particular furnish by me are correct. I am aware that any incorrect information may lead to cancellation of my registration. I promise to abide by the rules and regulation of Ranchi University.

Date:......25/01/24..............

Place:.......रांची......................

Shamu Soren
Signature of the Candidate

ABOUT THE SUPERVISOR

(To be filled by the Supervisor)

14. Name : डॉ० वर्षा शालिनी कुल्लू (Dr. VARSHA SHALINI KULLU)

15. Address of Correspondence: सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग गोस्सनर महाविद्यालय, राँची ।

Telephone 7765925197 Fax:

E-mail: VARSHAKULLU8@GMAIL.COM

16. Designation: सहायक प्राध्यापक

17. Teaching experience:

Post Graduate: 04 years/Dept

Under Graduate: 11 years/College

18. Title of the Ph.D. Thesis: "निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में मानव-संवेदना"

19. Specialization at the Master's level: विशिष्ट विधा एवं रचनाकार

20. Specialization at the Doctorate level: कथा साहित्य

21. Research Publications (Attach best five recent publications)

(a) National/International/Foreign/University/Referred Journals

(b) Proceedings of the National and International Conferences

(c) Books (Test as well as Reference):

(d) Abstract of best five Research Papers Published

वर्षा शालिनी कुल्लू

Dr. Varsha Shalini Kullu

Assistant Professor

P.G Department of Hindi

GOSSNER COLLEGE

22. Number of Research Scholars received Ph.D/D.Litt/D.Sc. degrees under your Supervision:............NIL............

23. Number of Ph.D. Scholars currently registered under your supervision.....TWO (2)...

24. Availability of the infrastructure and facilities at the proposed place of the work in relation to the proposed synopsis. Give details.
संलग्न

25. Whether any collaboration in the from the library, Laboratories, etc is required from another institution. It so, give details including the 'Certificate' from the authorized person of the Institute/Head of the Department/University allowing the candidate to use the facilities.
राँची

26. Name of least SIX eminent persons in the area of proposed research work in India to whom the proposed synopsis may be referred for opinion:

(i) डॉ० कुमार वीरेन्द्र, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद, वि॰ वि॰ प्रयागराज उत्तर प्रदे[illegible]

(ii) डॉ० मुक्तेश्वर नाथ तिवारी हि॰ वि॰ विश्वभारती शांति निकेतन पं॰ बंगा[illegible]

(iii) डॉ० सतीश कुमार राय हि॰ वि॰ बाबा भीमराव अम्बेडकर वि॰ वि॰ मुजफ्फरपु[illegible] (बिहार)

(iv) डॉ० रत्नेश विश्वकसेन, प्रोफेसर, केन्द्रीय वि॰ वि॰ ब्राम्बे राँची झारखण्ड

(v) डॉ० दिनेश कुशवाह, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा मध्यप्रदे[illegible]

(vi) डॉ० केदार सिंह अध्यक्ष हि॰ वि॰ विनोबा भावे वि॰वि॰ हजारीबाग।

27. CONSENT OF THE SUPERVISOR

I hereby give me consent to supervise the candidate on the proposed synopsis leading to Ph.D./D.Litt./D.Sc. degree of Ranchi University. I further certify that the synopsis referred above, to the best of my knowledge and information, has not been published and submitted elsewhere for the award of any diploma or degree.

Date:...25/01/24...

Place:...राँची...

वर्षा शालिनी कुल्लू

Signature of the Supervisor

7765925197

Dr. Varsha Shalini Kullu
Assistant Professor
P.G Department of Hindi
GOSSNER COLLEGE
Ranchi- 834001

28. PROCESSING OF THE APPLICATION

(a) Forwarding note of the Department Research Council (D.R.C.)

(b) Forwarding note of the Head of the University Department

(c) Forwarding note of the Dean of the Faculty Concerned

(d) Forwarding note of the Research Department Board

(e) Recommendation of the University Research Council

NOTE: The admission in the research Programme of the University is subject to the provisions of The Regulations vide Chapter XXVI, I and Chapter XXIX of Ranchi University Cord, Part-IV and the guidelines issued by the university from time to time in conformity with its Act, Statutes and Regulations.

<u>सहमति - पत्र</u> दिनांक -

शामु सोरेन को राँची विश्वविद्यालय, राँची की पीएच. डी. शोध - उपाधि के लिए " रणेन्द्र के कथा - साहित्य में आदिवासी- परिवेश,संघर्ष और संस्कृति " विषयक शोध - प्रस्ताव पर शोध - निर्देशन हेतु मैं सहमति प्रदान करती हूँ |

वर्षा शालिनी कुल्लू

Dr. Varsha Shalini Kullu
Assistant Professor
P.G. Department of Hindi
GOSSNER COLLEGE
Ranchi- 834001

(डॉ.वर्षा शालिनी कुल्लू)
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
गोस्स्नर कॉलेज,राँची

राँची विश्वविद्यालय के मानविकी संकाय के हिन्दी विभाग में पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारुप

" रणेन्द्र के कथा–साहित्य में आदिवासी–परिवेश, संघर्ष और संस्कृति "

शोध – निर्देशक

वर्षा शालिनी कुल्लू

डॉ. वर्षा शालिनी कुल्लू

Dr. Varsha Shalini Kullu
Assistant Professor
P.G Department of Hindi
GOSSNER COLLEGE
Ranchi- 834001

सहायक प्राध्यापिका, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

गोस्सनर महाविद्यालय

राँची (झारखण्ड)

शोधार्थी

शामु सोरेन

शामु सोरेन

नेट

वर्ष 2024

प्रस्तावनाः

हिन्दी कथा–साहित्य के इतिहास को जिस परिवेश में देख रहे हैं। उसकी कथा सदियों पुरानी है। यहाँ तक आने में विविध परिस्थियों से गुजरना पड़ा है। जितने भी भाषायें, बोली आदि हैं उसकी एक कथा परम्परा रही है।

कथा साहित्य समाज की परिदृश्य से ही लिखी जाती है। जैसे–जैसे समाज में किसी भी जाति, स्थिति, भाषा आदि की घटनायें घटती है उसकी कथा साहित्य वैसे ही बनती है। 21वीं शताब्दी में इन सभी स्थितियों को सही और साकारात्मक सोच की तरफ रूख करने में अनेक कथा साहित्याकोरों ने अपनी नवीन दृष्टिगोचर की भूमिका निभाई है।

इनमें सबसे प्रगतिशील कथा साहित्यकार रणेन्द्र का नाम सबसे अग्रणी रूप से लिया जा सकता है। जिस प्रकार आँचलिकता के क्षेत्र में रेणु का नाम बिल्कुल नहीं भुलाया जा सकता है, वैसे ही आदिवासियों के बारे में जानकारी को आगे बढ़ाने में रणेन्द्र का नाम लिया जाएगा। इनका जन्म 4 मार्च 1960 बिहार के नालंदा जिले के सोहसराय में हुआ। इनके पिताजी कॉलेज के अध्यापक थे। अध्ययन के परिवेश में रहने से 9 कक्षा में ही कवि मंडली में कविता सुना दिये थे। यही से इनका रुचि साहित्य के प्रति इच्छा बढ़ी। आगे चलकर झारखण्ड के खेल मंत्री के साथ–साथ प्रशासनिक कार्य में भी रहे हैं।

चूंकि यही कारण है, कि अलग–अलग जगह आने–जाने से इनका आदिवासियों के प्रति ज्ञान और उसके यथार्थ से रूबरू हुए। उनकी प्रमुख कथा साहित्यों में 'ग्लोबल गांव के देवता' जो मुख्यतः आदिवासियों के जीवन पर आधारित है। लगभग 427 प्रकार की जनजातियों में आते हैं। इसमें एक खास जनजातियों असुर आते हैं। ये जनजातियाँ तीन प्रकार के हैं। 1. वीर असुर–जो जंगल में अपना वनवासी रहा करते थे। 2. अगरिया असुर– लोह और आग के अविष्कार करते। 3. बिरजिया असुर–घूम–घूम के खेती करने वाले जनजातियाँ है। ऋग्वेद के समय पूरे विश्व में पाये जाते थे। असुर शब्द हम सभी गलत पर्यावाची के अर्थ में ग्रहण कर लेते हैं। जो ये शब्द सुनते ही

हमारे दिमाग में अलग विचार के बिल्कुल विपरीत है। बल्कि ये हमारी सामाजिक जीवन से बेहतर जीवन जीते हैं। इसका आदरणीय सूचक शब्द जोहार है, जिसका अर्थ सबका कल्याण करने वाली प्रकृति। इसके अन्य जनजातियों में खड़िया, कोड़ा, कोल, सदान, कोरबा, मुंडा आदि आदिवासी समाज में शामिल है।

इनकी दूसरी महत्वपूर्ण उपन्यास 'गायब होता देश' तथा रात बाकी तथा अन्य कहानीया, 'छप्पन छुरी बहत्तर पैंच' कहानी संग्रह हैं। 'गायब होता देश' उपन्यास में मुंडाओं की कथा संतप्त सारांश हैं शताब्दियों से संस्कृति और सभ्यता की पता नहीं किस छन्नी से छनकर अवशिष्ठ रूप में जीवित रहने वाले मुंडाओं समुदायों की गाथा पूरी प्रामाणिकता व संवेदनशीलता के साथ रणेन्द्र ने लिखी है।

रागदरबारी जैसे अमर कृति के रचयिता लेखक श्रीलाल शुक्ल की स्मृति में दिये जाने वाला श्रीलाल शुक्ल इफको सम्मान दिया गया। दिल्ली में एक समारोह में आयोजित कार्यक्रम में उन्हें 11 लाख पुरस्कार से नवाजा गया। इससे पहले जयपाल सिंह मुंडा जनजातियाँ शोध संस्था में निर्देशन के रूप भी कथादेश की कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया है। 2010 में जोशी स्मृति जनप्रिय लेखक सम्मान दिया गया। 2013 में बनारसी भोजपुरी सम्मान, 2019 में विमला देवी स्मृति तथा 2019 में वनमाली कथा सम्मान आदि से नवाजे जा चुके हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ के साहित्य पत्रिका 'नया ज्ञान उदय' में 2014 में लेखक पाठक की सर्वश्रेष्ठ 10 उपन्यासों में शामिल किया गया। यह उपन्यास मुंडा जनजातियों पर आधारित महत्वपूर्ण रचना है।

रणेन्द्र की कहानियों में "मार्जिनालाइजेशन" की प्रक्रिया का मेटाफर रचती है। आदिवासी इनके यहाँ कंसरण के रूप में मौजूद है। इस कहानियों की संग्रह से गुजरते हुए इनके सरोकारों की शिनाख्त की जा सकती है। कहा जा सकता है कि यथार्थ की आंच पर सींचती कहानियाँ है। इन कहानियों की पात्रों की बेबसी और विफलता जिस त्रासदी को रचते हैं, वह व्यवस्थाजन्य है। व्यवस्था की उस क्रूरता और उस उदासीनता

से चिंतन्यता का जन्म होता है जिसकी गहरी छाप कहानियों को पढ़ने के बाद भी दिलो दिमाग पर काबिज रहती है।

ये कहानियाँ ऐसे इलाको से सिर उठाने की जुर्रत करती है जहाँ अशिक्षा, गरीबी और बदहाली के घने जंगलो में व्यवस्था के हिंसक नरभक्षी मनमाना शिकार किया करते हैं।

रणेन्द्र का यथार्थबोध के जीवन–जगत के प्रत्यक्ष अनुभवों से जन्मा और विकसित हुआ है। इस कारण यथार्थ की जटिलता और उसकी कठोरता को परत दर परत उघाड़ते हुए वे जब यथार्थ के प्रकृत रूप का प्रत्यक्षिकरण करते हैं तो उनकी कहानियाँ औपन्यासिक्ता का भी आभास कराती है। कहानियों में प्रकृति और संस्कृति की यथार्थ मालूम होती है।

रणेन्द्र की कहानियाँ संभावनाओं और संसाधनों से परिपूर्ण उस प्रदेश की कहानियाँ हैं, जहाँ बंजरता अपना पाँव धीरे–धीरे पसार रही थी। अपने समय के लकवाग्रस्त होने और समाज के बंजर होने की प्रक्रिया को रणेन्द्र ने पूरी सिद्धत और ईमानदारी से इतिहास में दर्ज करने का काम किया है।

'गूंगी रूलाई का कोरस' एक हिन्दुस्तानी सांस्कृति का अनुष्ठान है। इसके माध्यम से एक संगीत घराने को लिया है। यह घराना उस्ताद महताबुद्दीन खान का है जिसकी चार पीढ़ी की कथा इसमें गुथी गयी है। घराने का ठौर है, मोसकी मंजिल यानी संगीत का घर जो पूरे उपन्यास के केन्द्र में है।

महताबुद्दीन से लेकर बाउल कमोल कबीर तक एक कहानी फैली पसरी है। जो अत्यंत सधे अंदाज में कुछ बड़े सवाल हमारे जेहन में रख जाती है।

इनकी भाषा सरल, स्वाभाविक, प्रभावोत्पादक मुहावरेदार है, जो लोगों को बहुत ज्यादा प्रभावित करती है।

इस शोध के माध्यम से रणेन्द्र की उन सभी पहलुओं पर शोध की जाएगी जो समाज को एक नवीन दृष्टि प्रदान करती हो। तथा उनकी रचनाओं से जो मूल बातें निकल कर आएगी उसे निष्कर्ष के तौर पर रखा जायेगा।

शोध की प्रेरणा:

हम जिस परिवेश से आते हैं। यहाँ की लोगों की दशा, दर्द और पीड़ा को जब मैं महसूस करता हूँ तो मेरे हृदय में एक अजीब सी हलचल मच जाती है। समाज में उनकी स्थिति, शिक्षा तथा उनके साथ किये जा रहे व्यवहार को देखकर बहुत खेद उत्पन्न होती है। आखिर आदिवासी एक मूल निवासी होने के बाद भी इतना पिछड़ा हुआ क्यों है ? कैसे आदिवासियों समुदाय पर लोग शोषण कर रहे हैं ? उसे हेय की दृष्टि से देखा जाता है। 'प्रकृति' के पूजक कहे जाने वाले आदिवासी तथा सबको सम्मान दृष्टि से देखने और सम्मान देने वाले को ही समाज गंदा बोलकर उसे पीछे धकेल दिया जा रहा है। चूंकि हम भी आदिवासी समुदाय से हैं। इन सभी चीजों का प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिला है। इसलिए आदिवासी लोगों की दर्द को साहित्य के माध्यम से उभारना चाहते हैं। लोगों को उससे अवगत कराना चाहते हैं।

हमे लगता है, कि साहित्य के माध्यम से समाज में समाज के लिए बेहतर कर सकते हैं। साथी ही जब मैं स्नातकोत्तर में अध्ययन कर रहा था। उस दौरान संवेदनशील रणेन्द्र की कथा साहित्य तथा अन्य रचनाओं को पढ़ने का अवसर मिला। अध्ययन करने के पश्चात मेरे लिए नई–नई शब्द अर्थ उभर कर सामने आया। जैसे–जोहार ! आदर सूचक शब्द जिसका अर्थ है – "सबको सम्मान देने वाली प्रकृति"। इनकी रचनाओं को पढ़ने के बाद पूर्ण विश्वास हो गया है कि समुदाय के लिए नई दिशा मिलेगी। इसी उद्देश्य से मैं शोध करना चाह रहा हूँ और इसकी प्रेरणा मुझे मेरे समाज परिवार और मेरे साहित्य से मिला।

शोध का महत्व :–

किसी भी शोध का विषय उद्देश्य पूर्ण होता है। उसके विषय को विस्तार के साथ–साथ नये–नये तथ्यों को जानने का प्रयास किया जाता है। चूंकि शोध समस्या से सम्बद्ध होता है उसी समस्या का समाधान के लिए शोध किया जाता है। शोध के माध्यम से व्यावहारिक समस्याओं का समाधान किया जाता है। पूर्व में किए गये शोध का निदान और आगामी शोध को नवीन दृष्टि से शोध की जाती है। शोध ज्ञात विविध पक्षों में विविधता लाती है।

जब हम किसी विषय के बारे में शोध करते हैं तो उसके विभिन्न पहलुओं का अध्यापन करते हैं। इससे हमारी बौद्धिक क्षमता और विश्लेषण करने की क्षमता विकसित होती है। इस शोध के माध्यम से अज्ञात तथ्यों को खोजने का प्रयास कर उसे एक नवीन धारा से व्याख्या कर के शोध किया जायेगा।

रणेन्द्र के कथा–साहित्य के माध्यम से समकालीन समाज के विसंगतियों और उसके प्रभाव :–

रणेन्द्र के कथा–साहित्य से यह जानने का प्रयास करेंगे कि तत्कालीन समाज में व्याप्त आदिवासी समाज में कितना परिवर्तन और प्रभाव पड़ा। जैसे– विवाह, कुप्रथा, शिक्षा, पारिवारिकला, औद्योगिक जैसे मामले को किस दृष्टि से समाधान प्रदान की है।

रणेन्द्र की रचनाओं के माध्यम से भाषा और शिल्प के क्षेत्र में नये :–

रणेन्द्र की कथा साहित्य में प्रयोग भाषा शैली, चित्र, मुहावरा, शब्द चयन का प्रयोग किस आधार पर किया जाएगा। उनके शब्द का क्या अर्थ होता है ? उनके रचनाओं के माध्यम से समाज में क्या प्रभाव पड़ा और क्या परिवर्तन हुआ। तथा उनके शिल्प दृष्टि का जानने का प्रयास किया जायेगा।

समकालीन समाज का परिस्थितियाँ और स्वरूप की जानकारी :–

इनकी कृतियों के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जायेगा की वर्तमान समाज में कितना परिवर्तन आया। खास कर औद्योगिक और पूंजीपतियों के क्षेत्रों में जानने का प्रयास किया जायेगा।

पूर्वानुसंधान

शोध कार्य हेतु प्रमुख कथा साहित्यों पर मेरे शोध चयनित विषय "रणेन्द्र के कथा साहित्य में आदिवासी परिवेश, संघर्ष और संस्कृति" पर मेरी दृष्टि में अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। जिस भी विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्य व वह लघु शोध कार्य हुआ है। वह मेरे शोध कार्य के विषय से बिल्कुल भिन्न है। जिसकी सूची नीचे दी जा रही है–

1. आदिवासी समाज जीवन का बदलता स्वरूप, (सोन भद्र जनपद के दुध्दी तहशील के आदिवासियों पर आधारित) चन्द्रशेखर सिंह, 10 नवम्बर 2017
2. रणेन्द्र का कथा–साहित्य और आदिवासी समाज, गिरधारी लाल महरा, राँची विश्वविद्यालय 2021
3. रणेन्द्र के साहित्य में विविध परिवेशः एक अध्ययन, रेखा कुमारी, राँची विश्वविद्यालय 2020
4. रणेन्द्र के कथा–साहित्य में समाज की अवधारणा एक अध्ययन, संजय कुमार यादव 2020
5. संजीव और रणेन्द्र के उपन्यासों में अभिव्यक्त आदिवासी चेतना का स्वरूप, शेष कुमार दिल्ली विश्वविद्यालय 2018

उपर्युक्त सूचियों से यह पता चलता है कि मेरे शोध कार्य का विषय मौलिक व भिन्नता से परिपूर्ण है।

शोध का उद्देश्य

शोध सोउद्देश्य होता है, प्रत्येक शोध की दिशा निर्दिष्ट होती है और सबका कोई न कोई उद्देश्य होता है। बिना उद्देश्य के शोध अर्थहीन होता है शोध का मुख्य उद्देश्य ही है ध्येय। जो नई संभावनाओं को तलाशना तथा अज्ञात तथ्यों को उजागर करना।

प्रस्तुत शोध विषय–'रणेन्द्र के कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श, संघर्ष और संस्कृति' में उनकी रचनाओं को विभिन्न दृष्टि से उनकी साहित्य की विशेषता कलात्मक, भावात्मक आदि जैसे पक्षों को सामने रखने का प्रयास किया जाएगा। समाज मैं आदिवासी के जीवन में क्या प्रभाव और बदलाव पड़ा। उनकी कथा कलात्मक दृष्टि से कितनी महत्वपूर्ण हैं। आदिवासी समुदायों के जीवन–संघर्ष जटिल समस्याओं की अभिव्यक्ति करने की चेष्टा की जाएगी। मूलवासी होने के बाद भी सबसे पिछड़ा और शिक्षा से दूर है। वतर्मान में इन समुदायों का समाज में अस्तित्व नगण्य होते जा रहा है। साहित्य समाज का दर्पण होता है जो समाज में घटित होगा उसकी परछाई साहित्य के पन्नों पर साफ दिखाई देती है।

इस शोध के माध्यम से उनके जीवन तथा उनकी कृति को भी उभारने का प्रयास किया जाएगा। तथा किनकी प्रेरणाओं से साहित्य की तरफ अग्रसर हुए क्योंकि स्नातक तक वे विज्ञान विषय के छात्र रहे हैं। आदिवासी समाज को सुदृढ़ करने में क्या योगदान है ? इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर शोध करने का मुख्य उद्देश्य रहेगा।

उक्त शोध के पूर्णतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रयोग करते हुए शोध किया जाएगा। मेरे इस शोध कार्य का मूल उद्देश्य 'रणेन्द्र' के कथा–साहित्य में आदिवासी विमर्श, संघर्ष और संस्कृति का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध कार्य के दौरान लेखक की प्रकाशित रचनाओं का अवलोकन कर आदिवासी जनजीवन के संघर्ष और सांस्कृति विशेषताओं पर प्रकाश डालना है।

शोध पद्धति :–

शोध पद्धति वह है जो शोधकर्ता अपने शोध कार्य में नियम को अपना कर शोध और विश्लेषण करता है। शोध पद्धति जो अनुशासन में रहते हुए अपने उद्देश्य की प्राप्ति होती है। प्रस्तुत कार्य शोध में रणेन्द्र की कथा साहित्य को आधार ग्रंथ के रूप में लिया जाएगा। उनकी कथा साहित्य का अध्ययन करते हुए उनके समकालीन साहित्यकारों को भी शामिल किया जाएगा ताकि शोध प्रमाणिक रूप से किया जा सके। प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित प्रविष्टियों का प्रयोग किया जाएगा –

1. ऐतिहासिक पद्धति – शोध एक नवीन तथ्यों का समग्र रूप प्रकट करना मुख्य उद्देश्य होता है। उसमें ऐतिहासिक शोध के माध्यम से आदिवासी संघर्ष और संस्कृति को जानने का प्रयास किया जाएगा।
2. तुलनात्मक पद्धति – इस शोध को अपनाकर समकालीन युग के विभिन्न कथा–साहित्यकारों की भाषा, कृति, पद्धति समाज को देखने की दृष्टि को आपसी तुलना उसके समग्र विशेषता को रखा जाएगा तथा उसके योगदान को दिखाया जाएगा।
3. रणेन्द्र के प्रकाशित समग्र कथा–साहित्य पर विशेष रूप से गहन अध्ययन–विश्लेषण किया जायेगा।
4. इस शोध कार्य में बेवसाइट, ब्लॉगों एवं अन्य प्रणालियों का सूक्ष्म अवलोकन किया जायेगा।
5. शोध से संबंधित विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन जिसमें समीक्षात्मक के साथ ही पूर्ववर्ती शोध ग्रंथों व अन्य संबंधित पुस्तकों, अखबारों, साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में उपलब्ध सामाग्रियों का सहयोग लिया जाएगा।
6. समाज शास्त्रीय पद्धति– इस शोध के माध्यम से रणेन्द्र की सामाजिक तत्व और सामाजिक परिवेश के साथ–साथ नैतिक और दार्शनिक तत्व का भी अध्ययन किया जाएगा। इस विधा से यह भी जानने का प्रयास करेंगे कि रणेन्द्र किस प्रकार से साहित्य को समाज से जोड़ा तथा उनके विचार धारा का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा।
7. मनोवैज्ञानिक पद्धति– वह शोध नियम जिसके माध्यम से हम किसी की मन की बात को समझने का प्रयास करते हैं तथा अंतर्चेतना का विश्लेषण कर पाते हैं। रणेन्द्र की कृतियों से उसके पात्रों को भी जानने का प्रयास करेंगे। उनके आधार और विचार धारा से भूमिकाओं को जानने का प्रयास करेंगे।

इस शोध प्रविधि के द्वारा रणेन्द्र की कृतियों से उनके पात्रों की मनः स्थिति, उनका मानसिक द्वन्द्व, कुंठा, आदि का मूल्यांकन विश्लेषण करने में सहयोग मिलेगा।

शोध की प्रासंगिकता :–

प्रस्तुत शोध कार्य हिन्दी के चर्चित मूर्धन्य उपन्यासकार रणेन्द्र के कथा साहित्य का समग्र अनुशीलन पर केन्द्रित है। रणेन्द्र इक्कीसवीं शताब्दी के एक प्रगतिशील कथाकार हैं। जो नवउपनिवेशवाद के प्रतिरोध मे स्थानीय जीवन और लोक परम्पराओं को तवज्जो देते हैं। उन्हों ने उन ज्वलंत समस्याओं को निदान करने का बीड़ा उठाया जो सामाज में निम्न तबके में आते हैं। जो अभी विलुप्त होते जा रहा है। जबकि भारत एवं विश्व में आदि जीवन की स्थापना उन्होंने ही की है। सभ्यता और संस्कृति की यात्रा मनुष्य ने उन्ही के पथ चिन्हों पर चलकर प्रारंभ की है।

आज आदिवासी जिस विकराल संकट का सामना कर रहे हैं। उसका मूल कारण राष्ट्र राज्य की आपार ताकत और आतंककारी हिंसक प्रवृति है। हमारे देश की लोकतांत्रिक सरकार बहुराष्ट्रीय कम्पनी के हित के लिए येन–केन प्रकारेंण से आदिवासीयों का पूर्णतः सफाया कर देना चाहती है। 'विकास' के साथ ही उनके साथ 'विनाश' जुड़ा गया है। और विकास की संकल्पना जीवन में 'कराह' बनकर आयी है। इस 'विकास' नामक शब्द से भी उन्हे डर लगता है। उनकी प्राकृतिक जीवन शैली प्रकृति से प्रेम, जंगल से नाता, जमीन की खुशबू, रीति–रिवाज, भाषा–संस्कृति, सरना वनस्पति जगत, मारंग बुरू–बोंगा, सारी नदियाँ इकिर बोंगा, जल देवता सब का सब नष्ट हो गया है, हो रहा है।

बदलाव एक ऐसी स्थिति है, जिसका मूल स्थाई होता है, अर्थात इस परिस्थिति या समाज के मूल को परिवर्तित नहीं किया जा सकता। यदि मूल स्थाई ही परिवर्तित हो जाए तो उसकी वस्तुगत स्थिति या मौलिकता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा हो जाता है। आदिवासियों की सबसे बड़ी चिंता है उनकी जमीन और बेटियां छिनी जा रहीं है। उनमें पहला है 'विदेशी वेदांग' ग्लोबल गाँव का बड़ा देवता कम्पनी है। विदेशी पर नाम देशी। दूसरा नाम है टाटा। जिसने असुरों के लोहा गलाने और औजार बनाने के हुनर को अंत कर दिया हैं यह इतिहास की सबसे बड़ी हार है। तथा वर्तमान समाज जिस तरह से पूंजीवादी विकास की दौड़ में शामिल लोग घास की तरह चरते जा रहे हैं। वह सम्पूर्ण धरती के लिए संकट बना हुआ है। ऐसे परिस्थिति में एकमात्र आदिवासी समाज के पास ही वे सारे 'टूल्स' मौजूद है। नही तो एक दिन इस धरती से नदी, पहाड़, पेड़–पौधे सब एक बारगी ही विलुप्त हो जायेंगे। 'सोना लेकान दिशोम' का परिवेश, भाषा, संस्कृति का विकास व संरक्षण इन ज्वलंत का समाधान हेतु साथ ही अतीत से वर्तमान और भविष्य को तुलना करके देखा जाएगा कि कितना परिवर्तन और विकास हुआ। इस दृष्टि से यह शोध आज भी प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है।

अध्याय विभाजन :–

प्रथम अध्याय – 1. रणेन्द्र का व्यक्तित्व और कृतित्व :–

क) रणेन्द्र का जीवन वृत्त

ख) व्यक्तित्व की दिशाएँ

ग) रणेन्द्र का रचना संसार

(i) कहानियाँ –

1.1 आदिवासी जीवन केंद्रित :– रात बाकी, चंपा गाछँ, अजगर और तालियाँ

1.2 अन्य कहानियाँ :– रफीक भाई को समझाइए, बारिश में भीगती गौरया।

(ii) उपन्यास :–

1.2.1 आदिवासी जीवन केंद्रित :– ग्लोबल गाँव के देवता (2009) गायब होता देश (2014)

1.2.2 अन्य उपन्यास :– गूंगी रुलाई का कोरस (2021)

(iii) कविताएँ :–

थोड़ा–सा स्त्री होना चाहता हुँ (2010), कविता रचती अवसान बेला पर, युद्ध स्त्री, सलवा जुडुम।

घ) संपादन कर्म :–

1.3.1 झारखण्ड इंसाइकलोपीडिया (चार खण्ड) 2008

1.3.2 पंचायती राजः हाशिये से हुकूमत तक।

द्वितीय अध्याय :– रणेन्द्र के कथा–साहित्य में वर्णित सामाजिक चेतना –

(i) व्यक्ति चेतना
(ii) पारिवारिक चेतना
(iii) नारी चेतना
(iv) जीवन संघर्ष
(v) शिक्षा के प्रति चेतना
(vi) आर्थिक चेतना
(vii) राजनीतिक चेतना

तृतीय अध्याय :– रणेन्द्र के कथा–साहित्य में वर्णित सांस्कृतिक चेतना –

(i) रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा
(ii) पर्व–त्योहार, पूजा–पाठ
(iii) मान्यताएँ, अंधविश्वास
(iv) लोक–नृत्य, नाच–गान
(v) अन्य।

चतुर्थ अध्याय :– रणेन्द्र के उपन्यासो में वर्णित आदिवासी चेतना –

(i) ग्लोबल गाँव के देवता में वर्णित आदिवासी चेतना –
क) असुर अस्मिता की संघर्ष कथा
ख) वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में आदिवासियों की उपस्थिति।
(ii) गायब होता देश में वर्णित आदिवासी चेतना –
क) मुण्डाओं के जीवन द्वन्द्व व संघर्ष
ख) मुण्डाओं के अतीत वर्तमान और भविष्य।

पंचम अध्याय :– रणेन्द्र के कहानियों में वर्णित आदिवासियों का संघर्ष –

(i) 'रात बाकी' कहानी में स्थित आदिवासी चेतना –
क) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के द्वारा आदिवासियों का दमन।
ख) घृणा के प्रति आदिवासियों का संघर्ष।
(ii) 'चंपा गाछँ' कहानी में स्थित आदिवासी चेतना –
क) कम्पनियों के भद्र श्रेष्टता के मुखौटों की आड़ से बचने की संघर्ष।
ख) स्त्रियों की दुर्दशा का सरकारी तंत्र से वितृष्णा की संघर्ष।

षष्ठ अध्याय :– रणेन्द्र के कथा–साहित्य में भाषा–शिल्प

(i) भाषा
(ii) शिल्प
(iii) मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग
(iv) आंचलिक एवं पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग।

उपसंहार :– संदर्भ ग्रंथो की सूची

(i) आधार ग्रंथ
(ii) सहायक ग्रंथ
(iii) पत्र–पत्रिकाएं
(iv) वेबसाइट

परिशिष्ट :– साक्षात्कार

NATIONAL TESTING AGENCY

Excellence in Assessment

E-certificate No.: **20D/21J31394**

University Grants Commission

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

NATIONAL ELIGIBILITY TEST FOR ASSISTANT PROFESSOR

NTA Ref. No: **210511008784** Roll No.: **JH02003893**

Certified that **SHAMU SOREN**

Son/Daughter of **JALODEE DEVI**

and **SHYAM LAL SOREN** *has qualified*

the UGC-NET for eligibility for Assistant Professor held on **26-12-2021** *for December 2020 and June 2021 (merged session) in the subject*

Hindi

As per information provided by the candidate, he/she had completed/appeared or was pursuing his/her Master's degree or equivalent examination in the related subject at the time of applying for UGC-NET.

The date of eligibility for Assistant Professor is the date of declaration of UGC-NET result, i.e., **19-02-2022** *or the date of completion of Master's degree or equivalent examination with required percentage of marks within two years from the date of declaration of UGC-NET result, i.e. by* **18-02-2024** *whichever is later.*

This is an electronic certificate only, its authenticity and category in which the candidate had appeared should be verified from 'National' Testing Agency (NTA) by the institution/appointing authority. This electronic certificate can also be verified by scanning the QR Code.

The validity of this electronic certificate is forever.

Date of issue: **12-03-2022**

Julparashar

Senior Director, NTA

Note: NTA has issued the electronic certificate on the basis of information provided by the candidate in his/her online Application Form. The appointing authority should verify the original records/certificates of the candidate while considering him/her for appointment, as the NTA will not be liable for any wrong information provided by the candidate. The NTA is only responsible for the result which can be verified from the repository available in the website of NTA (ugcnet.nta.nic.in). The candidate must fulfil the minimum eligibility conditions as laid down in the regulation for UGC NET.

स्व अभिप्रमाणित

शामु सोरेन

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल, विश्वविद्यालय, धनबाद, (झारखण्ड)

Binod Bihari Mahto, Koyalanchal University, Dhanbad,(Jharkhand)

Statement of marks for the examination of

SL.NO. : 000322/19

Bachelor of Arts (Core)

Session: 2016-19, (CBCS) held in the month of July, 2019

ROLL NUMBER : 170081000322 REGISTRATION NO.: A-H16070920/2016

STUDENT'S NAME : SHAMU SOREN

FATHER'S NAME : SHYAM LAL SOREN

NAME OF THE COLLEGE : P. K. ROY MEMORIAL COLLEGE, DHANBAD

Marks of Semester Sixth

SUBJECT	CORE Hindi													DSE 3 - Surdas, 4 - Rastrabhasha Hindi													
CREDIT	12													12													
PAPER	THEORY							PRACTICAL						THEORY							PRACTICAL						
	INT. ASSES.			END SEM.										INT. ASSES.			END SEM.										
	CC-13	CC-14	TOTAL	CC-13	CC-14	TOTAL	THEORY TOTAL	INT. ASSES.	END SEM.	TOTAL	CORE TOTAL	GRADE	POINT	DSE - 3	DSE - 4	TOTAL	DSE - 3	DSE - 4	TOTAL	THEORY TOTAL	INT. ASSES.	END SEM.	TOTAL	DSE TOTAL	GRADE	POINT
FULL MARKS	20	20	40	80	80	160	200				200			20	20	40	80	80	160	200				200		
PASS MARKS							80													80						
MARKS OBTAINED	10	12	22	54	63	117	139	-	-	-	139	B+	7	12	11	23	58	42	100	123	-	-	-	123	B+	7

Consolidated Marks Statement

SEMESTER	FIRST	SECOND	THIRD	FOURTH	FIFTH	SIXTH
FULL MARKS	350	350	450	450	400	400
CREDIT	20	20	26	26	24	24
MARKS OBTAINED	224	203	313	285	259	262
SGPA	6.7	6.5	7.08	6.62	7	7

GRAND TOTAL OF CORE PAPER : 1196 Out of 1800 CGPA : 6.83

TOTAL MARKS OBTAINED : 1546 Out of 2400 RESULT : First Class

* Note - Declaration of Classes on the Basis of CGPA : CGPA GRADE CLASSIFICATION OF FINAL RESULT : First Class-Exemplary 9.0-10.0,O+; First Class With Distinction 7.5 to 9.0; a First Class 6.0 to 7.5; Second Class 4.5 to 6.0; Pass : 4.0 and above but below 4.5.

स्वअभिप्रमाणित
शामु सोरेन

Date of Publication of Result : 25/07/2019

Controller of Examinations

0081000322

004401

Reg. No.: A-11100/0920/2016

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय

धनबाद (झारखण्ड)

स्नातक कला (प्रतिष्ठा)

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री/श्री. ***शामू सोरेन***
पी.के.रॉय मेमोरियल कॉलेज, धनबाद (सत्र *2016-19*),
ने ***जुलाई 2019*** में आयोजित ***स्नातक कला (प्रतिष्ठा)*** की परीक्षा
प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। ***स्नातक कला (प्रतिष्ठा) - हिन्दी***
की उपाधि उन्हें आज प्रदान की जाती है।

BINOD BIHARI MAHTO KOYALANCHAL UNIVERSITY

Dhanbad (Jharkhand)

Bachelor of Arts (Honours)

This is to certify that Ms/Mr. ***SHAMU SOREN*** of
P. K. ROY MEMORIAL COLLEGE, DHANBAD (Session *2016-19*) passed
the ***Bachelor of Arts (Honours)*** Examination held in the
month of *JULY 2019* and has been placed in ***First Class***
The Degree of **Bachelor of Arts (Honours) - Hindi** is
conferred upon her/him on this day.

Registrar

स्वअभिप्रमाणित
शामु सोरेन

Vice-Chancellor

... 2021

BINOD BIHARI MAHTO KOYALANCHAL UNIVERSITY , DHANBAD

No. : PG-11229/21

(EXAMINATION DEPARTMENT)

The following are the marks obtained by SHAMU SOREN ***Roll No. :*** 20183111229, ***Regn. No. : BBMK-A1928075,*** of UNIVERSITY DEPARTMENT, ***Master of Arts Final Examination (CBCS), Semester - IV of Session:*** 2019-21, ***held in the month of*** August, 2021.

Subject : **Hindi**

Paper	XIII					XIV					XV				
	Chhayawadi Kavya					Chhayawadottar Kavya					Bhartiya Evam Pashchatya Kavyashastra				
Credit	5					5					5				
Special Paper	Sessional	Theory	Total	Grade	Point	Sessional	Theory	Total	Grade	Point	Sessional	Theory	Total	Grade	Point
Full Marks	30	70	100			30	70	100			30	70	100		
Pass Marks															
Marks Obtained	21	40	61	B+	7	20	39	59	B	6	21	37	58	B	6

Paper	XVI				
	Katha Sahitya				
Credit	5				
Special Paper	Sessional	Theory	Total	Grade	Point
Full Marks	30	70	100		
Pass Marks					
Marks Obtained	20	49	69	B+	7

	Sessional Total	Theory Total	4th Sem Total & SGPA	3rd Sem Total & SGPA	2nd Sem Total & SGPA	1st Sem Total & SGPA	Aggregate of all the four Semester	C.G.P.A	Semester Grade
Full Marks	120	280	400	400	400	400	1600		
Pass Marks	48	112							
Marks Obtained	82	165	247 6.5	259 7	240 6.5	252 7	998	6.75	B+

10 point grading system

Marks %	Letter Grade	Grade Point
90-100	O (Outstanding)	10
80-<90	A+ (Excellent)	9
70-<80	A (Very Good)	8
60-<70	B+ (Good)	7
50-<60	B (Above Average	6
40-<50	C (Average)	5
40	P (Pass)	4
< 40	# F (Fail)	0
-	Ab (Absent)	0

Result

First Class

$SGPA = \frac{\text{Sum of Semester(Course Credit X Grade Point) all courses}}{\text{Sum of Semester(Course Credit)}}$

$CGPA = \frac{\text{Sum of (Total Course Credit X SGPA) all Semester}}{\text{Sum of(Total Course Credit) all Semester}}$

स्वअभिप्रमाणित
शामु सोरेन

Date of Publication of Result : 22/11/2021

Controller of Examinations

ISSN - 2231 - 5837 www.ijscjournal.com Journal Impact Factor No. : 7.841
RNI - UPBIL / 2011 / 38102

This International Peer-Reviewed & Refereed Journal
is available in Print as well as Online

Indian Journal of Social Concerns

इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स

A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

(An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)

(कला–मानविकी–समाजविज्ञान–जनसंचार–विधि–वाणिज्य–विज्ञान, वैचारिकी की अन्तर्राष्ट्रीय द्विमासिक शोध पत्रिका)

Volume - 12 : Issue - 54 July - Aug. 2023 Ghaziabad

Dr. Dhrub Kumar Singh
Guest Editor

Dr. Hari Sharan Verma
D.Litt
Editor in Chief

Dr. Raj Narayan Shukhla
Editor

Dr. Sangeeta Verma
Managing Editor

(A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES)

RNI-UPBIL/2011/38102

ISSN-2231-5837

Indian Journal of Social Concerns

इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स

(कला–मानविकी–समाजविज्ञान–जनसंचार–विधि–वाणिज्य–विज्ञान, वैचारिकी की अन्तर्राष्ट्रीय द्विमासिक शोध पत्रिका)

Volume -12: Issue - 54 **July - Aug. 2023** **Ghaziabad**

A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

(An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)

Journal Impact Factor No. : 7.841

Editor
Dr. RAJ NARAYAN SHUKHLA

Guest Editor
Dr. Dhrub Kumar Singh

Editor in Chief
Dr. HARI SHARAN VERMA

Asstt. Editor
Dr. MUKTA SONI

Art Editor
(MS) MANISHA VERMA

Legal Advisor
Dr. JASWANT SAINI
SHRI BHAGWAN VERMA

Office Assistant
JITENDER GIRDHAR

Sub Editor
Dr. PUSHPA
Dr. BEENA PANDEY (SHUKLA)

Managing Editor
Dr. SANGEETA VERMA

Joint Editor
Dr. PRIYANKA SINGH
Dr. SUBHASH SAINI

Computer Operator
MS. NEHA VERMA

- **The responsibility of the originality of the articles/papers shall be of the author.**
- **The editor does not owe any kind of responsibility in this regard**

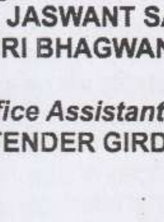

rub Kumar Singh
uest Editor

Dr. Hari Sharan Verma
D.Litt
Editor in Chief

Dr. Raj Narayan Shukhla
Editor

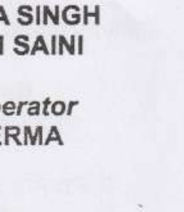

Dr. Sangeeta Verma
Managing Editor

मानविकी शोध पीठ प्रारम्भ सोसायटी,
गाज़ियाबाद द्वारा संचालित

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय / लेखक	पृष्ठ स.
1.	विश्व शांति के लिए भारत द्वारा किए गए निशस्त्रीकरण के प्रयास और आण्विक नीति डॉ0 रेनू राना	11–15
2.	महिला सशक्तिकरण मधु सिंगला	16–18
3.	Gender Inequality in Mahesh Dattani's Play "Tara": A Critical Analysis Pragini, Dr. Raja Ram	19–21
4.	वैष्णव धर्म की विष्वव्यापकता डॉ0 सुनीता शर्मा	22–24
5.	Scientific Use Of Ornaments And Tradition In Indian Culture Shamsher Singh, Dr Raja Ram	25–30
6.	भारत का विभाजन और साम्प्रदायिकता सतीश देशवाल	31–34
7.	Gotra System Is Helpful To Make A Man Monogamous Shamsher Singh, Dr Raja Ram	35–37
8.	गर्भपात का अधिकार और भारतीय महिलाएं डॉ0 रेणुका पोद्दार	38–42
9.	आपका बंटी में शकुन की नियति स्निग्ध सिंह	43–44
10.	विदेश नीति के संकल्पनात्मक और तात्विक मूलाधार प्रताप सिंह, डॉ0 वेदपाल सिंह	45–48
11.	हिंदी कथा साहित्य में किन्नर समुदाय : एक अध्ययन डॉ0 नरेश कुमारी	49–54
12.	परिवर्तनषील विष्व परिदृष्य और विदेष नीति प्रताप सिंह, डॉ0 वेदपाल सिंह	55–57
13.	वर्तमान भारतीय समाज में महिलाओं की चुनौतियां और संघर्ष डॉ0 भुपेन्द्र कौर	58–59
14.	भारतीय इतिहास में बहुलवाद Dr. Rekha Tyagi	60–63
15.	देवपरम्परा में संगीत सम्बन्धी शास्त्रोक्त वर्णन– हिमाचल प्रदेश के सन्दर्भ में डॉ० संतोष कुमार	64–66
16.	हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचना–प्रक्रिया नम्रता कुमारी	67–69
17.	उषा प्रियंवदा की वापसी कहानी में वृद्ध समस्याएँ डॉ0 वर्षा शालिनी कुल्लू	70–72
18.	अमृतलाल नागर के उपन्यास "नाच्यौ बहुत गोपाल" में दलित–समस्या आशा रानी केरकेट्टा	73–74
19.	पाश्चात्य शिक्षा का भारतीय साहित्य पर प्रभाव सुवाति	75–77
20.	दलित विमर्श के नए आयाम डॉ0 बुद्धप्रिय सिद्धार्थ	78–80
21.	प्रधानमन्त्री के रुप में राजीव गाँधी को लोकसभा में प्रचण्ड बहुमत प्राप्ति की समीक्षा डॉ0 जुल्फिकार अली	81–83
22.	मानवाधिकार को प्रभावित करता पर्यावरणीय प्रदूषण भारत के सन्दर्भ में : डॉ0 जिलेदार, डॉ0 आशुतोष	84–86
23.	अथर्ववेद और लोककल्याण दीपमाला	87–88
24.	जनजातीय जीवन और नगरीकरण करम सिंह मुण्डा	89–91

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय / लेखक	पृष्ठ स.
25.	मनीषा कुलश्रेष्ठ के कथा–साहित्य में नारी के विविध रूप पिंकी देवी, डॉ० कृष्णा जून	92–95
26.	घाड़ क्षेत्र की तहसील बेहट में बाढ़ एंव भूमिक्षरण की समस्या एवं समाधान. डॉ0 राजेन्द्र कुमार	96–98
27.	भारत चीन सीमा सम्बन्धः–एक अवलोकन Dr. Bharat Samrat	99–100
28	डॉ शीलधर प्रसाद सिंह : बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी शिल्पा बाड़ा	101–103
29.	मृदुला गर्ग के उपन्यासों में सामाजिक सरोकार रेनू कुन्डू	104–106
30.	भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और संवहन में भारतीय भाषाओं की भूमिका शकुन्तला बेसरा	107–108
31.	घरेलू एवं कामकाजी शिक्षित महिलाओं के आत्म सम्मान एवं समायोजन से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन नीतू सिंह, डॉ0 सतीष चन्द्र गोयल	109–113
32.	'जूठन' में चित्रित 'यथार्थ' बूटा सिंह	114–116
33.	इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों की हिन्दी कहानियों में नारी चित्रण स्त्री जीवन : तनाव, अलगाव और दबाव रेनू	117–119
34.	अमृतलाल नागर कृत' नाच्यौ बहुत गोपाल' में काम–वासना की समस्याएँ रामईश्वर कुमार	120–122
35.	भारत चीन सीमा विवादः –तिब्बत अध्याय Dr. Bharat Samrat	123–124
36.	पानीपत नगर में ठोस अपशिष्ट के कारणों एवं प्रभावों का एक अध्ययन डॉ.संदीप कुमार यादव, नीलम कुमारी	125–128
37.	जिन्दगी 50–50 : अभिव्यक्त किन्नर जीवन प्रीति नागर, डॉ. मिंतु	129–131
38.	भारतीय चित्रकला में आलेखन की अभिव्यंजना डॉ0 बीना दीक्षित प्रोफेसर	132–134
39.	Impact of Yoga Practice on Alcohol Dependent Patients Mr. Vikas Kumar, Dr. Shalini Kumari	135–137
40.	Significance Of Life Skills Education In Overall Developemnt of Adolescents Shakuntala Devi	138–140
41.	'Accelerating Digital Transformation with Reference to Banking Sector in India Ms Gargi Sharma	141–144
42.	The First Fundamental Source of Law And Order of The World: The Vedas P.L. Gautam	145–148
43.	Title:Custodial Violence in India: A Critical Examination through the Lens of Human Rights Dr. Pawan Kumar, Ms. Samriti	149–151
44.	Stabilty of Fluid Flows Dr. Sandeep Kumar Singh	152–153
45.	Theme of Familial Relationship in Shashi Deshpande's Novel- The Binding vine. Dr. Nirmal Boora	154–157

उषा प्रियंवदा की वापसी कहानी में वृद्ध समस्याएँ

17

डॉ0 वर्षा शालिनी कुल्लू

सारांश

उषा प्रियंवदा महिला कहानीकारों में विशेष उल्लेखनीय नाम है। उषा प्रियवंदा ने परिवारों के बिगड़ते हुए परिदृष्य को बड़ी यथार्थकता के साथ रखा है। उषा प्रियंवदा की 'वापसी' कहानी एक ऐसे ही परिवार की कहानी है। इस कहानी से उषा प्रियंवदा को बहुत प्रसिद्धि भी मिली। उषा प्रियंवदा ने आज के आधुनिक युग में समाज के भीतर टूटते रिश्तों को बड़े ही यथार्थकतापूर्वक दिखाया है। उषा प्रियवंदा ने इस कहानी के माध्यम से यह दिखाया है कि भले ही आज का समाज कितना भी आधुनिक हो जाए, आधुनिकता के नाम पर भले ही हम चाँद तक क्यों न पहुँच जाएँ? लेकिन घर के वे वृद्ध जिन्होंने घर बनाने के चक्कर में अपना जीवन अकेलापन के रूप में काट दिया हो उसके साथ इस तरह का व्यवहार कहाँ तक उचित है? उषा प्रियंवदा ने आधुनिकता की आड़ में जो अपने को इस समाज से आगे समझते हैं उस पर सवाल खड़ा किया है। इस कहानी में भी एक ऐसे ही वृद्ध की कहानी है। आज समाज़ में वृद्धों की समस्या को देखा जा सकता है। समाज आज एक गंभीर समस्याओं से गुजर रहा है और वे वृद्ध–समस्या के रूप में देखा जा सकता है। आज के समाज का सच यह है कि एक माँ–बाप अपने कई बच्चों को आराम से पाल सकते हैं लेकिन वही बच्चा बड़ा होकर एक माँ–बाप को नहीं पाल पाता। आज हमलोग आधुनिक होकर क्या यही सीखे हैं?अगर यही सीखे हैं तो ऐसी आधुनिकता से आधुनिक नहीं होना ज्यादा अच्छा है।

उषा प्रियंवदा की :वापसी' कहानी एक ऐसे ही वृद्ध की कहानी है जिन्होंने अपने बच्चों के चलते शहरों से दूर नौकरी की, हमेशा अकेलापन का दंश झेला। बच्चों और पत्नी को हमेशा शहरों में रखा। जिन्होंने अपने घर को घर बनाने में अपना पूरा जीवन खर्च कर दिए आज वही अपने घर में रिटायरमेंट के बाद फिट नहीं बैठ पाते। इस कहानी में गजाधर बाबू पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर होकर घर जाने के लिए काफी खुश है। वह पैंतीस साल से इसी दिन का इंतजार कर रहे थे। इस पैंतीस सालों में उन्होंने इसी अकेलापन में रहकर परिवार के बगैर रहकर सुखद दिनों की कल्पना की थी। इसी संदर्भ में उषा प्रियंवदा कहती हैं — "गजाधर बाबू खुश थे। बहुत खुश। पैंतीस साल की नोकरी के बाद वह रिटायर होकर जा रहे थे। इन वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रहकर काटा था। उन अकेले क्षणों में उन्हांने इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढ़ो रहे थे। संसार की दृष्टि में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था।"[1]

सचमुच गजाधर बाबू इस दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। वह नौकरी करते हुए हमेशा यही तो चाहा था कि वह अपने परिवार के साथ समय बितायें। उन्होंने इसी सुख की कामना ने अपना पैंतीस साल बीता दिए। आज वही घड़ी थी जो उन्होंने वर्षों से इंतजार किया था। इसलिए आज गजाधर बाबू खुश थे, बहुत खुश थे। क्योंकि उन्होंने इसी खुशी की आशा में छोटे स्टेशनों में रहकर भी, अभाव के जीवन जीकर भी संतुष्ट थे। दुनिया के नजरों में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था क्योंकि उन्होंने शहर में एक मकान बनवा चुके थे, बड़े लड़के अमर और लड़की कान्ति की शादियाँ कर चुके थे। दो बच्चे को ऊँची कक्षाओं मे पढ़ा रहे थे। अब इससे ज्यादा एक पिता को क्या चाहिए? गजाधर बाबू बहुत खुश थे और संतुष्ट भी। वे शहर में अपना घर बनवाया और खुद छोटे–छोटे स्टेशनों पर रहते रहे और हमेशा घर की जरूरतों को पूरा करते रहे। गौर करने वाली बात यह है कि उन्होंने अपने अभावभरी जीवन में भी अपने परिवारों को शहरों में रखा, अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दी। आज उसी सबको याद करके रिटायर होने के बाद भी खुश थे। आज इसी स्नेह की आकांक्षी गजाधर बाबू अपने उसी स्नेह की आस में घर जा रहे थे। लेकिन यह खुशी ज्यादा दिन तक नहीं रह सका। जिस दिन वह रिटायर होकर घर पहुँचे उस दिन इतवार का दिन था। सब घर में ही थे, सब रोज की भाँति अपनी–अपनी मस्ती में रमे थे। किसी को पिताजी के रिटायरमेंट को लेकर कोई खास उल्लास, उत्साह, चेहरे पर खुशी नहीं दिख रहा था। सभी परिवार के लोग और इतवार की भाँति ही जी रहे थे। उसी बीच गजाधर बाबू पहुँचते हैं, अपने घर में जाने से पहले जो–जो सपना देखे थे अब उसी को पूरा करने का समय था। नौकरी के कारण बच्चों के साथ कभी मनोविनोद नही कर पाया था। आज उसका भी मन उसी पिता की चाह में मनोविनोद का था। उन्होंने उस मनोविनोद में भाग भी लेना चाहा लेकिन बात वही की वही रही। अब कहानी और आगे बढ़ती है। अब इस घर के बारे में गजाधर बाबू जानना चाहते थे। उनकी व्यवस्था को ठीक करना चाहते थे और इसलिए उन्होंने सुबह का खाना का जिम्मा उनकी भाभी को और शाम का खाना का जिम्मा अपनी बेटी बसन्ती को दिया। दोनों ने इस बात को स्वीकार तो किया लेकिन इससे बचने का उपाय भी कर लिया। बसन्ती शाम का खाना ऐसा बनाया कि कोई खा नहीं सकता था फिर भी गजाधर बाबू ने खाया, लेकिन नरेन्द्र नहीं खा सके। माँ ने उसे मनाकर फिर से अपनी हाथों से बनाकर खिलाया। भाभी ने अलग चाल चली। जो गजाधर बाबू ने इस घर को बनाने में अपना सबकुछ निछावर कर दिया उन्हीं के लिए उस मकान में एक कमरा तक नहीं है। आज उनके लिए इस घर में रहने के लिए अस्थायी प्रबंध किया गया है। इसी संदर्भ में उषा प्रियंवदा लिखती हैं — "नाश्ता कर, गजाधर बाबू बैठक में चले गए। घर छोटा था और ऐसी व्यवस्था हो चुकी थी कि उसमें गजाधर बाबू के रहने के लिए कोई स्थान न बचा था। जैसे किसी मेहमान के लिए कुछ अस्थायी प्रबंध कर दिया जाता

है, उसी प्रकार बैठक की दीवारों को दीवार से सटाकर बीच में गजाधर बाबू के लिए पतली सी चारपाई डाल दी गई।"[2] जिस घर को बनाने में उन्होंने अपना सबकुछ खो दिया सुख, चैन आदि उसी घर में मालिक के लिए जगह नहीं है। उनके लिए अस्थायी प्रबंध किया गया है।, जैसे मेहमानों के अचानक आ जाने पर व्यवस्था की जाती है। गजाधर बाबू आज अपने ही घर में मेहमान जैसे लग रहे थे। वैसा मेहमान जो बिन–बुलाये आ गये हैं। ये आज के आधुनिक युग की विसंगति ही तो है कि कोई वृद्ध अपने ही घर में अजनबी हो जाता है और इसी बारीकि से उषा प्रियंवदा ने इस आधुनिक समस्या को दिखाया है। बसन्ती को शीला के घर जाने से मना करने पर गजाधर बाबू से वो भी बात करना छोड़ दी थी। नरेन्द्र की पत्नी और नरेन्द्र पिताजी से अलग रहना चाहते थे। कारण पहले जिस आजादी से घर में रहते थे, जो मन होता है सो करते थे, दोस्तों को घर बुलवाकर मस्ती करते थे, पत्नी को सिनेमा ले जाता था, अब वह बंद हो गया था। गजाधर बाबू को पत्नी से कम से कम उम्मीद थी लेकिन वह भी इसी घर गृहस्थी में उलझ गयी थी। उनकी पत्नी को भी यह ज्ञात नहीं हो रहा था कि उनके पति के दिल पर क्या गुजर रहा था? इसी संदर्भ में उषा प्रियंवदा लिखती हैं –– "गजाधर बाबू बैठे हुए पत्नी को देखते रह गए। यही थी क्या उनकी पत्नी, जिसके हाथों के कोमल स्पर्श, जिसकी मुस्कान की याद में उन्होंने संपूर्ण जीवन काट दिया था?उन्हें लगा कि वह लावण्यमयी युवती जीवन की राह में कहीं खो गई और उसकी जगह आज जो स्त्री है, वह उनके मन और प्राणों के लिए नितांत अपरिचिता है।"[3]

सचमुच गजाधर बाबू ने जिस घर की कल्पना की थी वह अब बिल्कुल अलग था। जब से बसन्ती को बुरा लगा था उससे भी ज्यादा बुरा गजाधर बाबू को लगा था। वे भी अब इस घर की परिस्थितियों को समझ चुके थे। इसलिए उन्होंने अब इस घर के मामले में न बोलने की बात कह दी। एक दिन जब वह घर लौटे तो देखा कि उनका बिस्तर बैठक में नहीं है, उनका चारपाई पत्नी के कमने में लगी थी जहाँ पर अचार, रजाइयों और कनस्तर पड़ा हुआ था। अचानक से उनके मन में कई विचार उभरने लगे थे। वे सोच रहे थे कि जिस घर में गृहस्वामी के लिए एक चारपाई को रखने की जगह नहीं है, जिस घर में बच्चों के जीवन में उनके लिए कहीं स्थान नहीं, उस घर में परदेशी की तरह ही रहना ज्यादा उचित है। गजाधर बाबू को सबसे ज्यादा दुःख इस बात को लेकर था कि पत्नी ने भी उनके इस बात पर गौर नहीं किया, पत्नी भी उनकी मनःस्थिति को नहीं समझ सकी। गजाधर बाबू ने आहत दृष्टि से अपनी पत्नी को देखा। गजाधर बाबू अब महसूस कर रहे थे कि हम केवल धनोपार्जन के लिए थे, जिसका अपने ही घर में धन कमाने के अलावा कुछ नहीं था। गजाधर बाबू की रिटायरमेंट के बाद का उत्साह सब समाप्त हो चुका था। वह सोच रहे थे कि क्या इसी दिन के लिए उन्होंने इतने कष्ट झेले, सबके साथ रहने के लिए अकेले में रोए। घर में गजाधर बाबू ने नौकर को हटा दिया। इस पर भी अमर के द्वारा कहा गया वह वाक्य काफी सोचनीय है। अमर अपने पिता को 'बुढ़े आदमी' हैं कह संबोधित करता है और कहता है बुढ़े आदमी हैं चुपचाप पड़े र इस बात ने गजाधर बाबू के मन को अंदर से झकझोर दिय सचमुच घर के उस मालिक को जब बुढा कहा गया होगा तो बीता होगा यह आप कल्पना कर सकते हैं। 'वापसी' कह इसलिए आधुनिक कहानियों के केन्द्र में रहा है। यह कहानी 19 में एक सवाल खड़ा कर दिया था। इस संदर्भ में डॉ० रामचंद्र तिव लिखते हैं –– "वापसी एक समय आलोचकों के मन–मस्तिष्क छा गयी थी। इसमें अवकाश ग्रहण करने के बाद गजाधर बाबू अपने ही घर में फालतू या पराया हो जाने का बोध और उ उत्पन्न पीड़ा ने पाठकों को विचलित कर दिया था।"[4]

सचमुच यह कहानी आज के पाठकों को सो पर मजबूर करता है। इस कहानी का अंत तो और भी ज्य सोचनीय है। गजाधर बाबू अब इस घर में अपने को फिट नही पाते हैं इसलिए वह अब इस घर को छोड़ने पर विचार करते इसलिए उन्होंने सेठ रामजीमल के यहाँ नौकरी करने की बात कहते हैं। और कहीं न कहीं उनके मन में यह विश्वास भी होत कि घर के यलोग उन्हें जाने से रोकेंगे कोई नही तो कम से पत्नी तो रोकेगी ही, लेकिन जब घर में इस बात की सूचना दे तो सब स्वाभाविक रूप से तैयार हो जाते हैं। फिर कुछ और कहने की इच्छा होती है लेकिन चुप हो जाते हैं। गजाधर बाबू क हैं –– "मुझे सेठ रामजीमल की चीनी–मिल में नौकरी मिल गई खाली बैठे रहने से तो चार पैसे घर में आएँ, वही अच्छा है। उन तो पहले ही कहा था, मैंने ही मना कर दिया था। फिर कुछ रूक जैसे बुझी हुई आग में एक चिनगारी चमक उठे, उन्होंने धीमें स्व कहा, मैंने सोचा था कि बरसों तुम सबसे अलग रहने के अवकाश पाकर परिवार के साथ रहूँगा। खैर, परसों जाना है। भी चलोगी?मैं?पत्नी ने सकपकाकर कहा मैं चलूँगी तो यहाँ का होगा, इतनी बड़ी गृहस्थी फिर सयानी लड़की?"[5]

गजाधर बाबू का मन अपनी पत्नी के जवा बहुत आहत हुआ। जिस घर के लिए उन्होंने क्या–क्या नहीं कि आज उसी घर में उनके लिए जगह नहीं है। आज हम एक समाज में जी रहे हैं जहाँ एक पिता को बुढ़ा कहा जाता है। घर में बरसों से रहने की आकांक्षा थी, वह धरा का धरा ही रह है। नरेन्द्र ने जितनी तत्परता से रिक्सा को बुला लाया और बि बाँधा। इस बात से साफ जाहिर होता है कि घर के लोग यही च थे। गजाधर बाबू अंत में रिक्सा से चलते हुए बड़े ही आहत ह उस परिवार को देखते–देखते विदा हो गये। घर से जाने के घर के सभी लोग अपने–अपने कामों में लग गए और सबसे बात यह है कि अमर की बहू ने चहकते हुए अमर से पूछा कि सि ले चलिएगा न?और बसन्ती भी उछलकर कहा – भइया हम कितनी अजीब बात है न कि एक ही परिवार में रहने वाले घ

वृद्ध को बेकार समझा जाता है। उनके लिए बुजुर्ग का मतलब चुपचाप किसी कोने में पड़े रहना है। गजाधर बाबू जैसे लोग आज समाज में बहुतेरे मिल जाएँगे जो इस तरह के दंश झेल रहे हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आज के आधुनिक युग मे हम कहाँ पहुँच गये हैं? इसे फिर से देखने की जरूरत है। आज गजाधर बाबू अपने ही घर में अजनबी बन कर रह गये। जिस घर को बनाने में अपने खून को लेई बना दिये वही रिटायर होने के बाद भी अपने ही घर में अकेलेपन का दंश झेल रहे हैं। आज के समय में वृद्ध समस्या एक अहम समस्या है जिस पर विचार करना जरूरी बन गया है।

शोध–संदर्भ :

1. उषा प्रियंवदा, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1960 ई0, पहला संस्करण 2018 ई0, पृ0 31
2. वही, पृ0 23
3. वही, पृ0 34–35
4. डॉ0 रामचंद्र तिवारी, हिन्दी का गद्य–साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1955 ई0, बारहवाँ संस्करण 2018, पृ0 424
5. उषा प्रियंवदा, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1960 ई0, पहला संस्करण 2018 ई0, पृ0 39

सम्पर्क सूत्र –
डॉ0 वर्षा शालिनी कुल्लू
सहायक प्राध्यापिका,
हिन्दी विभाग,
गोस्सनर कॉलेज, राँची,
मो0 नं0 7765925197
फ्लैट नं0 – 2/ए
ब्लॉक ए, असारी रसिडेन्सी
दिनकर नगर, गितिलपीड़ी,
हटिया, राँची – 834003

ISSN - 2231 - 5837 www.ijscjournal.com Journal Impact Factor No. : 7.01
RNI - UPBIL / 2011 / 38102

This International Peer-Reviewed & Refereed Journal
is available in Print as well as Online

Indian Journal of Social Concerns

इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स

A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

(An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)

(कला–मानविकी–समाजविज्ञान–जनसंचार–विधि–वाणिज्य–विज्ञान, वैचारिकी की अन्तर्राष्ट्रीय द्विमासिक शोध पत्रिका)

Volume - 12 : Issue - 52 Mar.- Apr. 2023 Ghaziabad

Dr. Dinesh Chander Shukhla
Guest Editor

Dr. Hari Sharan Verma
D.Litt
Editor in Chief

Dr. Raj Narayan Shukhla
Editor

Dr. Sangeeta Verma
Managing Editor

(A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES)

RNI-UPBIL/2011/38102

ISSN-2231-5837

Indian Journal of Social Concerns

इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स

(कला–मानविकी–समाजविज्ञान–जनसंचार–विधि–वाणिज्य–विज्ञान, वैचारिकी की अन्तर्राष्ट्रीय द्विमासिक शोध पत्रिका)

Volume -12: **Issue - 52** **Mar. - Apr. 2023** **Ghaziabad**

A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

(An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)

Journal Impact Factor No. : 7.01

Editor
Dr. RAJ NARAYAN SHUKHLA

Guest Editor
Dr. DINESH CHANDER SHUKHLA

Editor in Chief
Dr. HARI SHARAN VERMA

Asstt. Editor
Dr. MUKTA SONI

Sub Editor
Dr. PUSHPA
Dr. BEENA PANDEY (SHUKLA)

Art Editor
(MS) MANISHA VERMA

Managing Editor
Dr. SANGEETA VERMA

Legal Advisor
Dr. JASWANT SAINI
SHRI BHAGWAN VERMA

Joint Editor
Dr. PRIYANKA SINGH
Dr. SUBHASH SAINI

Office Assistant
JITENDER GIRDHAR

Computer Operator
MS. NEHA VERMA

- **The responsibility of the originality of the articles/papers shall be of the author.**
- **The editor does not owe any kind of responsibility in this regard**

Dr. Dinesh Chander Shukhla
Guest Editor

Dr. Hari Sharan Verma
D.Litt
Editor in Chief

Dr. Raj Narayan Shukhla
Editor

Dr. Sangeeta Verma
Managing Editor

मानविकी शोध पीठ प्रारम्भ सोसायटी,
गाज़ियाबाद द्वारा संचालित

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय / लेखक	पृष्ठ स.

1.	डॉ० सन्तराम देशवाल के निबंधों में व्यक्ति, परिवार एवं समाज के संदर्भ में सामाजिक चेतना नवीना, प्रो० (डॉ०) आशा सहारण	12–14
2.	गीताजंली श्री के कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ बोध राजरानी, प्रो० (डॉ०) कमला कौशिक	15–17
3.	राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त का भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में अभूतपूर्व योगदान डॉ0 जितेश्वर कुमार पाण्डेय	18–19
4.	वीरेन डंगवाल के काव्य में निहित यथार्थ प्रीति खजूरिया	20–23
5.	नीना पॉल का जीवन परिचय और उनका प्रवासी साहित्य में योगदान किरण कटोच	24–26
6.	हिन्दी साहित्य और संस्कृति में पर्यावरण चिन्तन डॉ0 प्रणव शास्त्री	27–28
7.	हिन्दी साहित्य में पर्यावरण शिक्षा डॉ0 मनुप्रताप	29–32
8.	प्रेमचंद जी की रचनाओ मे नारी अस्मिता की खोजे काजल	33–36
9.	भारतीय दर्शन और अध्यात्म डॉ० नीभा शर्मा	37–41
10.	"हारमोनियम वाद्य की सीमाएं और सम्भावनाऐं Dr. Swati	42–44
11.	"वैश्वीकरण के प्रभाव से भारतीय संगीत का बदलता स्वरूप" Shruti	45–46
12.	महादेवी के काव्य में गीति तत्त्व डॉ० किरण कुमारी	47–49
13.	गढ़वाल हिमालय में पर्यटन एवं उसका क्षेत्रीय सामाजिक आर्थिक विकास पर प्रभाव डॉ0 प्रदीप कुमार	50–53
14.	आचार्य बलदेवराज शांत के गीतों में वेदना डॉ0 दिनेश कौशिक	54–55
15.	हिंदी कहानी में दलित उत्पीड़न का सिलसिला समस्या एवं प्रभाव श्रीमती जयश्री	56–58
16.	वैदिक वाड्.म्य में चिकित्सा शास्त्र डॉ० बबलू शर्मा	59–61
17.	गाजीपुर जनपद के आर्थिक विकास में औद्योगिक अवसंरचना एवं नियोजन की भूमिका–एक भौगोलिक अध्ययन रमेश कुमार भारती, डॉ. कैलाश नाथ तिवारी	62–63
18.	संताली भाषा की विशेषताएँ प्रो0 दयाल चन्द्र मंडल	64–67
19.	निर्मल वर्मा के उपन्यासों में मानवीय संवेदना डॉ0 वर्षा शालिनी कुल्लू	68–69
20.	अमृतलाल के उपन्यासों में आत्महत्या की समस्याएँ रामईश्वर कुमार	70–72
21.	अमृतलाल नागर के उपन्यासों में स्त्रियों की समस्याएँ आशा रानी केरकेट्टा	73–74
22.	भूमंडलीकरण और हिन्दी डॉ0 नवीन कुमार	75–76
23.	प्रभा खेतान के उपन्यासों में भारतीय नारीवाद मंजू बाला	77–78
24.	आदिवासी, साहित्य विमर्श : चुनौतियां और संभावनाएं रेनू	79–82
25.	भ्रष्टाचार का चित्रण और हिन्दी साहित्य (विशेष संदर्भ प्रेमचंद) डॉ0 रजनी दिसोदिया	83–84

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय / लेखक	पृष्ठ स.

26.	कहानीकार अरूण प्रकाश डॉ0 रानी कुमारी	85–87
27.	अस्पृश्यता पर भगत सिंह के विचार तकदीर सिंह	88–90
28	हिन्दी साहित्य की 'वसुधैव कुटुंबकम् साधना' डॉ0 पूनम कुमारी	91–92
29.	दिनकर के काव्य में नारी भावना ज्योति कुमारी	93–95
30.	मैकियावली की रचना 'द प्रिंस': वर्तमान परिदृष्य में प्रासंगिकता Dr. Mamta Rani	96–98
31.	विभूति नारायण राय के उपन्यासों मे राजनीति और प्रशासन : डॉ0 अलका अर्क	99–101
32.	प्रवासी भारतीय हिन्दी लेखन और राष्ट्रीय अस्मिता डॉ0 राजपाल	102–104
33.	डॉ0 राजपाल की मनस्विता में कबीर नीलम कुमारी	105–106
34.	भारत में शहीदों की नगरी शाहजहाँपुर जनपद का भौगोलिक अध्ययन डॉ0 जिलेदार, डॉ0 जुल्फिकार अली	107–111
35.	इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों की कहानियों में नारी–जीवन का अन्तसंघर्ष रेनू, डॉ0 राकेश चन्द्र	112–113
36.	आदिवासी जीवन और कला का सम्बन्ध शकुन्तला बेसरा	114–115
37.	आधुनिक संस्कृत साहित्य में नारी–विर्मश अनुराधा	116–117
38.	झारखंड की युवा कवयित्री जसिंता केरकेट्टा जया जायसवाल, डॉ० ललिता कुमारी	118–120
39.	आधुनिक काल में संगीत का स्वरूर्प ज्योति	121–122
40.	हरभगवान चावला के काव्य में सामाजिक संवेदना किरण	123–125
41.	नागार्जुन–प्रकृति, सौंदर्य एवं प्रेम चेतना श्रीमती सविता	126–128
42.	ज्ञानप्रकाश ' पीयूश' के काव्य में सामाजिक यथार्थवाद किरण	129–131
43.	हिन्दी साहित्य पर महात्मा गाँधी का प्रभाव श्रीमती मनजीत	132–136
44.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के प्रति सकारात्मक प्रवृत्तियाँ। प्रियांशु कुमार	137–140
45.	कौटिलीय अर्थशास्त्रम् एवम् आधुनिक लोक प्रशासन एक अध्ययन डॉ0 हरिप्रकाश वाजपेयी	141–143
46.	दसवें दशक के हिन्दी नाटकों में व्यवस्था के प्रति नारी विद्रोह संबंधी दृष्टि डॉ0 संगीता वर्मा	144–146
47.	वैश्विक परिवेश में भारत में उच्च शिक्षा की स्थिति डॉ0 प्रवीण कुमार वर्मा	147–149
48.	हरियाणा के खत्री / अरोड़ा समुदायों की पारिवारिक संरचना का समाजशास्त्रीय विश्लेषण आशु चौहान	150–152
49.	जीवत सव सम चौदह प्रानी डॉ0 जंग बहादुर पाण्डेय 'तारेश'	153–154
50.	हरियाणा के हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित कामकाजी महिला डॉ0 मंजीत	155–156

(RNI-UPBIL/2011/38102, ISSN-2231-5837)
JOURNAL IMPACT FACTOR NO. 7.01

निर्मल वर्मा के उपन्यासों में मानवीय संवेदना

19

डॉ0 वर्षा शालिनी कुल्लू

सारांश

निर्मल वर्मा स्वातंत्र्योत्तर युग के एक सशक्त उपन्यासकार हैं। निर्मल वर्मा ने अपने उपन्यासों में मानवीय संवेदना को बखूबी रखा है। मनुष्य के जीवन में मानवीय संवेदना का बहुत बड़ा महत्व है। किसी भी साहित्य में मानवीय संवेदना का न होना साहित्य की आत्मा का न होना है। निर्मल वर्मा ने अपने उपन्यासों में मानवीय संवेदना को ही सबसे ऊपर रखा है। निर्मल वर्मा के उपन्यासों में मानवीय संवेदना को बखूबी देखा जा सकता है। निर्मल वर्मा ने पाँच उपन्यास लिखा है। जो निम्न है —

(1) वे दिन (1964 ई0)

(2) लालटीन की छत (1974 ई0)

(3) एक चिथड़ा सुख (1979 ई0)

(4) रात का रिपोर्टर (1989 ई0)

(5) अंतिम अरण्य (2000 ई0)

निर्मल वर्मा ने अपने सभी उपन्यासों में मानवीय संवेदना के तत्व को ऊपर रखा है।

(1) वे दिन – यह उपन्यास 1964 ई0 में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास में निर्मल वर्मा ने बखूबी से आधुनिकता बोध के सारे सूत्र को रखे हैं। निर्मल वर्मा ने इस उपन्यास में मानवीय संवेदना के महत्व को दिखाया है। यह उपन्यास यूरोपीय प्रवास की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इस उपन्यास यूरोपीय पात्रों को लेकर युद्ध के बाद की स्थिति को दिखाया गया है। युद्ध के बाद मानव मन पर क्या प्रभाव पड़ता है इसी को बारीकि से निर्मल वर्मा दिखाने का काम किये हैं। इस उपन्यास का एक पात्र रायना है जो अपने पति से विच्छेद के बाद अपने पुत्र मीता के साथ चेकोस्लोवाकिया में रहती है। निर्मल वर्मा ने इस उपन्यास में युद्ध के बाद की हताशा और अवसाद को बड़ी ही कुशलता से दिखाया है। युद्ध के बाद मानवीय संवेदना जीवन के किसी भी पक्ष में कितना हावी होता है। इसी को दिखाया गया है। इस संदर्भ में मधुरेश कहते हैं — "युद्ध के बाद की हताशा और अवसाद रायना में मूर्त्त होते दिखाई देते हैं। उससे बेहतर शायद उसे और कोई नहीं जानता कि लड़ाई में बचपन नहीं गुजरना चाहिए क्योंकि फिर वह जिंदगी भर पीछा नहीं छोड़ती।"[1]

स्पष्टतः इस उपन्यास में देखा जा सता है बचपन में हुए युद्ध के प्रभावों को मानवीय संवेदना पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता है।

(2) लालटीन की छत – इस उपन्यास का प्रकाशन 1974 ई0 में हुआ है। यह उपन्यास शिमला की पृष्ठभूमि में लिखा गया है। इस उपन्यास में काया नाम की एक बच्ची के किशोरी बनने तक की यात्रा को दिखाया गया है। निर्मल वर्मा ने एक बच्ची से किशोरी बनने के उपरांत किस–किस परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है और मानवीय मन में क्या–क्या चलते रहता है उसी को बारीकि से दिखाया है। निर्मल वार्मा ने वयःसंधि की गोपनीयता और रहस्य को मानवीय संवेदना के धरातल पर क्या फर्क पड़ता है?उसी को दिखाया है। इस उपन्यास में 'काया' का अकेलापन उसमें बढ़ती हताशा, आक्रोश और जीवन से झुँझुलाहट को दिखाया है। इसी संदर्भ में गोपाल राय लिखते हैं — "लालटीन की छत' में एक वयःसंधि की ओर बढ़ती लड़की (काया) के इर्द–गिर्द फैली एकाकी, रहस्यपूर्ण, आतंकपूर्ण दुनिया और उसकी यौन चेतना की संवेदनाओं तथा उनसे उत्पन्न मानसिकता का अंकन किया गया है।"[2]

निर्मल वर्मा ने उपन्यासों में मानवीय संवेदना को पात्रों के अनुकूल रखे हैं।

(3) एक चिथड़ा सुख – यह उपन्यास 1979 ई0 में लिखा गया है। इस उपन्यास में 'विट्टी', 'इरा' और 'मुन्नू' और 'नित्तीभाई' की अधूरी जिंदगी की कहानी है। इस उपन्यास में बुद्धिजीवियों के एक साथ रहते हुए अलग–अलग जीने के अनुभव को रखा गया है। आज के मानवीय युग में मनुष्य की सुख की गहरी ईच्छा कहाँ तक पहुँचा सकती है, इस उपन्यास में देखा जा सकता है। आज के युग में मानव संबंधों की जटिलता और गहरी उदासीनता के बीच सुख की तलाश को उपन्यासकार ने मानवीय संवेदना के धरातल पर गहरे रूप में रेखा है। इस उपन्यास में एक–दूसरे से जुड़े होने पर भी पात्र अपनी भीतरी दुनिया में अकेले का दंश झेल रहे हैं। इसी संदर्भ में डॉ0 रामचंद्र तिवारी लिखते हैं — "यह सभी पात्र अपनी पहचान की तलाश में भटक रहे हैं। इसलिए उनका सुख चिथड़ा हो गया है। शायद लेखक यह कहना चाहता है कि वर्त्तमान समाज में मानवीय संबंधों की पहचान नहीं बन पा रही थी। यह आज के संवेदनशील मानव की नियति है।"[3]

डॉ0 रामचंद्र तिवारी की बातों से मैं बिल्कुल सहमत हूँ। मनुष्य अपनी पहचान की तलाश में हतने व्यस्त हो गये हैं कि जीवन में और कुछ दिखता ही नहीं और जीवनपर्यन्त इसी पहचान की होड़ में लगा रहता है। मनुष्य इसी पहचान की तलाश में आज भटक रहे हैं और इसलिए उसका सुख चिथड़ा–चिथड़ा हो गया है। आज के युग में सुख किसी के पास पूरा का पूरा नहीं है। इसका एक और कारण मानवीय संवेदनाओं को अनदेखा करना है। मनुष्य आज यंत्र की भाँति चलना और चलाना चाहता है। और इसी का परिणाम उसके जीवन पर पड़ रहा है। आज के युग में व्यक्ति समाज में रहकर भी अपने को अलग–थलग रखने का प्रयास करता है। वे अपने आप को समाज से कटा रहना ज्यादा पसंद करता है और वर्त्तमान समय में समाज में मानवीय संबंधों की पहचान भी नही कर पा रहे हैं। व्यक्ति इसी संबंधों में उलझकर अपना जीवन बर्बाद कर रहा है। मानवीय संबंधों का पहचान न हो पाना जीवन के प्रति निराश, ऊब पैदा करना है। और इसी के कारण आज मानव समाज का सुख चिथड़ा–चिथड़ा पड़ा हुआ है।

(4) रात का रिपोर्टर – यह उपन्यास 1989 ई0 में प्रकाशित हुआ है। यह उपन्यास इमरजेंसी की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इस

उपन्यास में 'रात का अँधेरा' आपातकाल का प्रतीक है। इस उपन्यास में व्यक्ति और समाज के भीतर के समाये हुए डर, संत्रास को व्यक्त किया गया है। इस उपन्यास में 'रिशी' पत्रिका का रिपोर्टर है जो शंकालु है और अपने डर से डरा हुआ है। 'रिशी' अपने ही अविश्वास से ग्रस्त है। इस उपन्यास में आतंक, अविश्वास, रहस्य और मानसिक यातना की [illegible] को उजागर किया गया है। उपन्यास के केन्द्रीय पात्र 'रिशी' का आंतरिक संकट आपातकालीन परिस्थितियों से उत्पन्न है। इसी संदर्भ में गोपाल राय लिखते हैं — "उपन्यास में चित्रित रात अंधेरी है जो अपने प्रतिकार्थ में आपातकाल के आंतक और अविश्वास पूर्ण [illegible] को संकेतित करती है। कदाचित् उपन्यासकार रिशी की [illegible] को ग्रस्त किए हुए आतंक को 'मानव नियति के संकट' के रूप में [illegible] चाहता है। एक रहस्यमय, अपरिभाषित दहशत पूरे उपन्यास में [illegible] है।"[4]

निर्मल वर्मा ने इस उपन्यास में मानव नियति को दिखाया है। मानवीय संवेदना के स्तर पर यह उपन्यास बहुत ही अच्छा है। इस उपन्यास ने मानव के भीतर की संवेदनाओं को उभारा है।

[illegible] अरण्य – यह उपन्यास 2000ई0 में प्रकाशित हुआ है। यह उपन्यास परिचित ढाँचे से बिल्कुल अलग है। इस उपन्यास में कई [illegible] पात्र हैं जिनमें पूर्व कलेक्टर मेहरा साहब है। मेहरा साहब की पत्नी [illegible] और बेटी 'तिया' है। इस उपन्यास में इसके अलावे [illegible] बाबू और डॉ0 सिंह हैं। इस उपन्यास में निर्मल वर्मा ने मृत्यु के साक्षात्कार को दिखाया है। पात्र जीवन और मृत्यु के द्वन्द्वमें घिरे [illegible] के बीच में नजर आते हैं। इसी संदर्भ में डॉ0 रामचंद्र तिवारी लिखते हैं — "पात्र जीवन और मृत्यु के रहस्यों में उलझे [illegible] देते हैं। मृत्यु क्या है?क्या इसके साथ जीवन का अंत हो जाता है? [illegible] जो आदमी मरता है, वह वही होता है, जो पैदा है?जो जीवन [illegible] है वह क्या अपनी इच्छानुकूल अपनी शर्तो पर जीते हैं?ऐसा [illegible] नहीं होता।"[5]

डॉ0 रामचंद तिवारी ने सच ही कहा है कि इस उपन्यास में मृत्यु के रहस्यों को पूरे तन्मयता के साथ खोलने का प्रयास किया है। इस उपन्यास में कई रहस्यमयी प्रश्नों को उठाया गया है। कई सारे [illegible] स्वाभाविक भी दिखता है। निर्मल वर्मा ने इस उपन्यास के [illegible] जीवन और मृत्यु के रहस्यों पर विचार किया है।

[illegible]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है निर्मल वर्मा ने अपने उपन्यासों में मानवीय संवेदना को बहुत ही बारीकि से रखने का काम किये हैं। निर्मल वर्मा का उपन्यास पाठकों के ऊपर गहरे प्रश्न छोड़ते हुए नजर आते हैं। निर्मल वर्मा ने अपने उपन्यासों में एक अलग ही दुनिया [illegible] है। निर्मल वर्मा ने मानव मन में चल रहे द्वन्द्वों को बखूबी से [illegible] है। निर्मल वर्मा अपने समय के बड़े उपन्यासकार के रूप में गिने जाते हैं। निर्मल वर्मा ने दिखाया है कि मानव मन में संवेदना कितनी [illegible] होती है। बिना संवेदना के मानव मन की कल्पना तक नहीं की जा सकती। अतः स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि मानव के मन में चल रहे संवेदनाओं का संग्रह ही साहित्य का निर्माण करता है। [illegible] साहित्य में बिना इसके काम नहीं चल सकता है, और निर्मल वर्मा ने अपने उपन्यासों में अनिवार्य रूप से गहन चिंतन के साथ रखा है।

संदर्भ – सूची :

1. मधुरेश, हिन्दी उपन्यास का विकास, सुमित प्रकाशन इलाहाबाद, प्रकाशन वर्ष 2009, पृ0 195
2. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2005, पृ0 287
3. डॉ0 रामचंद्र तिवारी, हिन्दी का गद्य–साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रकाशन वर्ष 1955, पृ0 275
4. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2005, पृ0 288
5 डॉ0 रामचंद्र तिवारी, हिन्दी का गद्य–साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रकाशन वर्ष 1955, पृ0 276

सम्पर्क सूत्र –

डॉ0 वर्षा शालिनी कुल्लू,

सहायक प्राध्यापिका,

हिन्दी विभाग,

गोस्सनर कॉलेज, राँची,

मो0 नं0 7765925197

फ्लैट नं0 – 2/ए

ब्लॉक ए, असारी रसिडेन्सी

दिनकर नगर, गितिलपीड़ी,

हटिया, राँची – 834003